डॉ कुमारी चम्पा
महाराजा कॉलेज
आरा

प्रश्न → (1) संस्कृत आचार्यों द्वारा प्रतिपादित काव्य-लक्षण पर विचार कीजिए।

उत्तर :— भारतीय विभिन्न आचार्यों ने अपनी रुची के अनुसार काव्यलक्षण का निर्माण किया है। काव्यलक्षण प्रस्तुत करनेवाले आचार्यों के दो वर्ग हैं। प्रथम वर्ग उन आलोचकों का है जो काव्य की आत्मा के आधार पर काव्य को परिभाषित करते हैं और दूसरा वर्ग उन आलोचकों का है जो संघटना को ध्यान में रखकर काव्य की परिभाषा प्रस्तुत करते हैं। संघटना के आधार पर काव्य को परिभाषित करनेवाले आचार्यों की दृष्टि काव्य के बाहरी रूप, अवयव, अंग की संघटना पर विशेष रूप से रहती है। इसके विपरीत आत्मवादी आचार्यों की दृष्टि काव्य की आन्तरिक विशेषता पर केन्द्रित होती है। प्रथम कोटि में भामह रूद्रट आदि आचार्य आते हैं जबकि दूसरी कोटि के आचार्यों में दण्डी, विश्वनाथ और पंडित राज जगन्नाथ आते हैं।

भरत :— संस्कृत के प्रथम आचार्य हैं भरत। इन्होंने काव्य की अलग परिभाषा नहीं दी है। अपने नाट्यशास्त्र में काव्यबन्ध की शोभा बढ़ानेवाले 36 लक्षणों का वर्णन दिया है। काव्य की सबसे प्राचीन परिभाषा अग्निपुराण की माननी चाहिए :—

"संक्षेपाद्वाक्यमिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली।
काव्यंस्फुरदलंकारं गुणवद्दोष वर्णितम्।

अर्थात् इष्ट अर्थ को प्रकट करनेवाली पदावली शब्दावली से युक्त ऐसा वाक्य काव्य है जिसमें अलंकार प्रकट हो और जो दोषरहित और गुणयुक्त हो।

भामह :— भामह ने स्पष्ट शब्दों में काव्य का लक्षण प्रस्तुत किया है :—

"शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्"

भामह की इस परिभाषा पर अत्यधिक विवाद है। डॉ० नगेन्द्र इन शब्दों का अर्थ - सहित अर्थात् सामंजस्यपूर्ण शब्द अर्थ को काव्य कहते हैं। डॉ० भगीरथ मिश्र के अनुसार इससे भामह का तात्पर्य शब्द और अर्थ दोनों की विशेषताएँ

जिससे प्रकट हो ऐसा दोनों का संघटन।

रूद्रट :– आचार्य भामह के अनुकरण पर शब्दार्थ को काव्य माननेवालों की संस्कृत काव्यशास्त्र में विशाल परंपरा दृष्टिगोचर होती है आचार्य रुद्रट के शब्दों में —

"ननु शब्दार्थौ काव्यम्",

दण्डी :– दण्डी का काव्य शरीरलक्षण इस प्रकार है –

"शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली"

अर्थात् इष्ट अर्थ से परिपूर्ण पदावली का नाम काव्यशरीर है।

कुंतक :– कुंतक के मतानुसार "रमणीयता से विशिष्ट न तो अकेला शब्द ही काव्य है और न अकेला अर्थ ही। इन दोनों के सहितभाव का नाम काव्य है –

"न शब्दस्यैव रमणीयता विशिष्टस्य केवलस्य काव्यम् नाप्यर्थस्येति"।

मम्मट :– आचार्य मम्मट की दृष्टि में काव्य का लक्षण है "तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि" अर्थात् दोष से रहित, गुण और अलंकार से युक्त शब्द और अर्थ काव्य है।

संस्कृत में आचार्य मम्मट की ही परिभाषा का अनुसरण किया है। आचार्य हेमचन्द्र बाणभट्ट आदि आचार्यों में इन्हीं का अनुसरण करके अपने-अपने काव्यलक्षण प्रस्तुत किए हैं।

(क) अदोषौ सगुणौ सालंकारौ च शब्दार्थौ काव्यम्

— हेमचन्द्र

(ख) शब्दार्थौ निर्दोषौ प्रायः सालंकारौ काव्यम्

— बाणभट्ट

विश्वनाथ कविराज :– आचार्य मम्मट की परिभाषा और स्थापना की आलोचना करते हुए विश्वनाथ कविराज ने रस को आधार मानकर काव्य की परिभाषा प्रस्तुत की है :–

"वाक्यं रसात्मकम् काव्यम्"।

वह वाक्य जिसकी आत्मा रस है काव्य कहलाता है अर्थात् अलौकिक आनन्द को उत्पन्न करनेवाले वाक्य को काव्य

की संज्ञा प्रदान की है। काव्य की आत्मा ही रस है। इस आत्मभूत रस से सम्पन्न जो वाक्य होता है वही काव्य है। यहाँ 'रस' शब्द विस्तृत अर्थ में समझा जाता है। अर्थात 'भाव' रसाभास तथा भावाभास आदि रस की समीपवर्ती भावनाएँ भी यहाँ रस के अंतर्गत समझी जाती हैं।

पंडितराज जगन्नाथ – पंडित जगन्नाथ को कविराज विश्वनाथ का यह लक्षण संकीर्ण प्रतीत हुआ। इन्होंने कहा है कि इस परिभाषा को मानलेने से बड़े-बड़े कवियों के महाकाव्यों को अलग रख देना पड़ेगा। पंडित राज जगन्नाथ ने अपनी भिन्न परिभाषा प्रस्तुत की है जिसमें न रस की ओर संकेत किया है न गुण की ओर। वस्तुत: उन्होंने अर्थ की रमणीयता पर ही सबसे अधिक बल दिया है उनका प्रख्यात काव्य लक्षण है – "रमणीयार्थ प्रतिपादक: शब्द: काव्यम्।" अर्थात रमणीय अर्थ का प्रतिपादन शब्द काव्य होता है। काव्य में शब्दों द्वारा प्रतिपादित अर्थ ऐसा हो जिसमें चित्त रमण और आनन्द उठाए। आनन्द काव्य रचना का प्रमुख प्रयोजन माना गया है। भारतीय मनीषी ही नहीं वरण पाश्चात्य चिंतक भी इसकी महत्ता को स्वीकार करते हैं।

इस परिभाषा में ध्वन्याचार्य आनन्दवर्धन का 'लोकोत्तर आह्लाद' वामन का सौन्दर्य दण्डी का 'स्वर्थ' और कुंतक का वक्रताजन्य आह्लाद आदि सभी तत्व आ जाते हैं। अतएव यह परिभाषा सर्वाधिक पूर्व कही जा सकती है। जहाँ मम्मट आदि आचार्य शब्द और अर्थ को एक ही स्तर पर स्थापित करते हैं वहाँ जगन्नाथ अर्थ को शब्द का विश्लेषण मानते हैं पर शब्द और अर्थ का साहित भाव जगन्नाथ को भी अभिमत है।

शब्द अर्थ अथवा दोनों की रमणीयता से युक्त वाक्यरचना को काव्य कहते हैं। हिन्दी के रीतिकालीन आचार्य केशवदास ने काव्यलक्षण नहीं दिया है। कविता को दोषरहित बनाने के लिए उन्होंने अवश्य यह संकेत किया –

"राजत रंच न दोषयुक्त कविता वनिता मित्र।"